शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2012

संत विनोबा का आर्थिक दर्शन

श्रीमती पल्लवी शुक्ला
ऑक्सफोर्ड जूनियर कॉलेज, उज्जैन, मध्यप्रदेश

शोध संक्षेप

विनोबाजी का जन्म 11 सितम्बर 1895 को पश्चिम महाराष्ट्र में छोटे से गांव गागोदे में हुआ। उनके पिता नरहरि भावे बड़ौदा में कपड़ा मिल में कैमिस्ट थे इसलिए विनोबाजी की प्रारंभिक शिक्षा बड़ौदा में हुई। 20 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और 1916 में गांधीजी के आश्रम में आ गए। सन् 1921 से 1931 तक वर्धा में आश्रम में आचार्य रहे। 32 से 38 तक हरिजन सेवा के निमित्त नालवाड़ी वर्धा गांव में रहे। सन् 1938 में धाम नदी के किनारे वर्धा–नागपुर रोड पर पवनार गांव में अपना आश्रम बनाया और वहां कांचन मुक्ति का प्रयोग किया। सन् 1951 से 1964 तक 14 वर्षों तक भूदान यज्ञ के लिए देशभर में पदयात्रा की। सन् 1956 से 1969 तक ग्रामदान तूफान के लिए बिहार में वाहन यात्रा की और अंत में सन् 1969 से 1982 तक पवनार आश्रम में ही रहे और 15 नवंबर 1982 को दीपावली के दिन स्वेच्छा से निर्वाण प्राप्त किया। प्रस्तुत शोध प्रबंध में परंपरागत अर्थशास्त्र के संदर्भ में संत विनोबा के आर्थिक विचारों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है।

आधुनिक अर्थशास्त्र में उपभोग, उत्पादन, विनियम, वितरण और राजस्व के सिद्धांतों का विवेचन करने की परंपरा है। आर्थिक प्रवृत्तियों को इन विभागों में विभाजित कर प्रत्येक विभाग के भी अनेक उपविभाग कर और अनेक पहलुओं को अलग–अलग रखकर देखने की अध्ययन करने की परंपरा है। आधुनिक अर्थशास्त्री इसी पद्धति का अनुसरण करते हैं। विनोबाजी परंपरागत अर्थ में अर्थशास्त्री नही थे। उन्होंने अपने विचारों को उपभोग, उत्पादन आदि विभागों में विभाजित करके प्रस्तुत नहीं किया है।

महात्मा गांधी ने भारत की आजादी की लड़ाई का सफल नेतृत्व किया। यद्यपि गांधीजी पूर्ण स्वराज्य चाहते थे लेकिन वे अपने जीवनकाल में राजनैतिक आजादी प्राप्त कराने में आंशिक सफल हुए। गांधीजी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा देश को एक राष्ट्र के रूप में विकसित करने और एक सम्पूर्ण राजनैतिक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इकाई के रूप में विश्व समुदाय के समक्ष खड़ा करने का सपना संजोया था। इसीलिए वे राजनैतिक स्वतंत्रता से आगे बढ़कर सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस को विसर्जित कर उसे 'लोक सेवक संघ' में परिवर्तित करना चाहते थे। दुर्भाग्य से गांधीजी की असामयिक मृत्यु से यह नहीं हो सका। विनोबा जी ने गांधीजी के विचारों को आगे बढ़ाया। इसलिए स्वातंत्र्योत्तर काल में देश के नवनिर्माण के लिए विनोबाजी के विचारों का विशेष महत्व है। विनोबाजी के आर्थिक विचारों का अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वे सन् 1916 से 1948 तक गांधीजी के साथ रहे। गांधीजी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह आंदोलन के एक प्रमुख नेता और सहयोगी रहे, व्यक्तिगत सत्याग्रह के 'प्रथम सत्याग्रही' रहे और खादी ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता निवारण, नई तालीम, गोसेवा आदि रचनात्मक कार्यक्रमों के प्रयोगकर्ता और प्रमुख मार्गदर्शक रहे। इसीलिए गांधीजी के जाने के बाद वे गांधीजी के 'आध्यात्मिक उत्तराधिकारी'

के रूप में देश और विश्व में विख्यात हो गये। विनोबाजी ने न केवल गांधीजी के विचारों की व्याख्या की वरन् उसमें युगानुकूल संशोधन कर उसे आगे भी बढ़ाया।

हमारा देश 1947 के पहले दुनिया का सबसे बड़ा गरीब और गुलाम देश था वह आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और दुनिया के प्रथम दस औद्योगिक देशों में से एक बन गया है। एक ओर देश में आर्थिक उदारवाद की आंधी चल रही है और अर्थव्यवस्था का ग्लोबलाइजेशन हो रहा है तो दूसरी ओर ग्राम व्यवस्था टूट रही है। लाखों तरुण देहात छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। शहरों में तेजी से गंदी बस्तियां बढ़ रही हैं, अपराध बढ़ रहे हैं, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, नशा बढ़ रहा है, रोग बढ़ रहे हैं प्रदूषण फैल रहा है और भोगवादी संस्कृति का प्रसार हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि समय रहते यदि देश की की प्रतिभा और संस्कृति के अनुरूप देश की आर्थिक नीतियों में परिवर्तन नहीं किया गया तो समुन्नत भारतीय संस्कृति और सभ्यता मिस्र, सीरिया, रोम और दजला–फरात की संस्कृतियों जैसी ही यादगार के रूप में रह जायेगी। भविष्य में भारत को भी अपनी संस्कृति को खण्डहरों में तलाशना होगा। ऐसी दुःखद परिणति से देश को बचाने के लिए गांधी–विनोबा जैसे मनीषियों के विचारों का गंभीर अध्ययन करने की जरूरत है।

इक्कीसवीं शताब्दी अनेक नयी संभावनाओं को लिए हुए है। विश्व में राजनैतिक साम्राज्यवाद समाप्त हो गया है। साम्यवादी विश्व बिखर रहा है, लोकतंत्र का तेजी से प्रसार हो रहा है, विज्ञान का अत्यंत तीव्रगति से विकास हो रहा है, सैनिक संधियां टूट रही हैं, संचार क्रांति, सूचना क्रांति अपने पूरे जोरों पर है, विश्व अर्थव्यवस्था को विश्वव्यापीकरण हुआ है, शिक्षा का लोकव्यापीकरण हो रहा है और वैश्विक मानवता अपने विकासकाल में है। वस्तुतः नये विश्व का और नये मनुष्य का ही निर्माण हो रहा है। शोषण और हिंसा पर आधारित समाज में से शोषण मुक्त और अहिंसक समाज का जन्म कैसे हो इस विषय पर आध्यात्मिक संत और मनीषी आचार्य विनोबा के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। जिस प्रकार इस शताब्दी के पूर्वार्ध में जबकि दुनिया के लगभग 150 देश गुलाम थे और भारत गुलाम देशों में सबसे बड़ा गुलाम देश था और गांधीजी के नेतृत्व में जिस प्रकार भारत ने आजादी की लड़ाई लड़ी और अपनी आजादी हासिल की और जिसके परिणाम स्वरूप कुछ ही वर्षों में विश्व के लगभग सभी देश राजनैतिक गुलामी से मुक्त हो गये। उसी प्रकार आज लगभग सारा विश्व उपभोक्ता संस्कृति, औद्योगिक संस्कृति की आर्थिक–सामाजिक–मानसिक और नैतिक गुलामी में फंस गया है।

दुनिया के अनेक प्रगतिशील विचारकों और बुद्धिजीवियों को आशा थी कि कार्ल मार्क्स की विचारधारा समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की विश्व संस्कृति का विकास कर सकेगी, जहां 'मुक्त मानवों का मुक्त भाईचारा' होगा और सारा समाज शोषण रहित और शासन रहित होगा। लेकिन सोवियत संघ के विसर्जन और चीन में लोकतंत्र के अस्वीकार ने यह सिद्ध कर दिया कि साम्यवाद या मार्क्सवाद में विश्व को आर्थिक गुलामी से मुक्त करने की शक्ति और प्रेरणा नहीं रही है।

निसर्गवादी अर्थशास्त्री आज के अर्थ में भले ही अर्थशास्त्री न माने जाएं लेकिन उन्होंने वस्तु का मूल्य और न्याययुक्त मूल्य, न्याययुक्त पारिश्रमिक और ब्याज या सूद की नैतिकता पर गहराई से चिंतन किया था। उस समय ये

प्रश्न इतने तीखे नहीं बने थे क्योंकि समाज का एक बड़ा वर्ग स्वावलंबी था और परस्परावलंबन से काम चल जाता था। लेकिन बाजार और मेलों में वस्तु विनिमय ने मूल्य का प्रश्न उपस्थित कर दिया। उधार लेन–देन भी प्रारंभ हुआ और मजदूरी की समस्या भी खड़ी कर दी। पहले के विचारकों और लेखकों ने आर्थिक व्यवहार के लिए अलग से सिद्धांत नहीं बनाये और न ही इस पर स्वतंत्र ग्रंथ की रचना की। भारत में कौटिल्य का अर्थशास्त्र नाम से प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र का नहीं बल्कि राज्य संबंधी ग्रंथ है। ग्राम स्वालंबन का विकास परावलंबन में हुआ और अंततः इसी में से व्यापारवाद का भी विकास हुआ। इस विकास क्रम का अच्छा दर्शन निम्नांकित विचारकों के साहित्य में मिलता है।

संत ऐविवनास (1225–1275) ने उस समय व्यापार वस्तुओं के मूल्यों में सूद लेने–देने के बारे में धर्म विचार और व्यावहारिक जीवन में सामंजस्य बैठाने का प्रयास किया।''**1** जबकि मार्टिन लूथर (1483–1546) ने बढ़ती हुई व्यापार प्रवृत्ति पर ही प्रहार किया, क्योंकि इससे पूंजीवाद का उदय हो रहा था और ग्राम व्यवस्था टूट रही थी। व्यापारवादी अर्थशास्त्रियों ने कुछ बुनियादी नैतिक मूल्यों को स्वीकार कर अर्थशास्त्र के सिद्धांत का निरूपण किया। उन्होंने अर्थशास्त्र को व्यापार के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया। इन्होंने धार्मिक नैतिक मर्यादाओं से आबद्ध अर्थशास्त्र को राजनैतिक अर्थशास्त्र में विकसित किया। इन्होंने व्यापार राष्ट्रीय संदर्भ में सम्पत्ति निर्माण, सरकारों की भूमिका, कर प्रणाली, राष्ट्रीय उद्योगों की स्थापना और संरक्षण तथा आर्थिक नीतियों के निर्धारण के नियम भी विकसित किए। राष्ट्रवाद की स्थापना में व्यापारवादियें ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

व्यापारवादी आर्थिक विचारधारा के विवेचन में जीन बोडिन (1530–1596), थामस मून (1501–1543), पी.डब्ल्यू. हार्निक का साहित्य उल्लेखनीय है। धीरे–धीरे सूद वस्तु का बाजार मूल्य और स्पर्धा में ऐसे तत्व थे जो आर्थिक व्यवहार में मान्य हो गये। व्यापार में अब यह प्रश्न नहीं रहा था कि सूद लेना पाप है या कि मुनाफा कमाना पाप है। अब यह प्रश्न था कि देश की अर्थ व्यवस्था के हित में कितनी लाभप्रद है और ब्याज की दर कितनी हो कि जिसे राष्ट्रीय मजबूती मिले, प्रोत्साहन मिले। जीन बोडिन ने महंगाई पर अपने विवेचन में लिखा है, ''महंगाई का बड़ा कारण है कि यहां अपने देश में सोना और चांदी प्रचुर मात्रा में उपलबध है जो सौ साल पहले नहीं था, दूसरा कारण यह है कि वस्तुओं पर कुछ लोगों ने एकाधिकार कर रखा है, तीसरा कारण यह है कि वस्तुओं का अभाव हो गया है क्योंकि इनका निर्यात कर दिया गया है या किन्हीं कारणों से इनकी फिजूलखर्ची हुई है और पांचवा कारण राजा और सामंत हैं। जिन्होंने वस्तुओं की कीमतें बढ़ा दी है।''**2**

फिलिप हार्निक (1638–1712) लिखता है – देश को ऊंचा उठाने के लिए निम्नांकित नीतियां बनानी चाहिएः

1. जमीन सुधार और खेती पर ध्यान दिया जाए
2. देश में उपलब्ध कच्चे माल को देश में ही पक्के माल में बदला जाए
3. जनसंख्या की कुशलता बढ़ाई जाए
4. सोना और चांदी को हमेशा चलन में रखा जाए। न तो उन्हें जमीन में गाढ़ा जाए और न ही अन्य किसी उपभोग में लगाया जाए। सोना विनिमय का माध्यम था।

5. देश के लोग अपना उपभोग देश में बनी वस्तुओं तक सीमित रखें विदेशी वस्तुओं का मोह न रखें
6. विदेशों से कुछ वस्तुओं का आयात करना अनिवार्य होने पर वह अपनी उतनी ही वस्तुओं के निर्यात करने से प्राप्त करें। सोना चांदी न देना पड़े इसका ध्यान रखें।
7. विदेश से जो वस्तुएं प्राप्त करें वह कच्चे माल के रूप में ही प्राप्त करें और उसका पक्का माल देश में ही बनाएं
8. अपने उत्पादन आधिक्य को देश के बाहर सोने–चांदी के बदले में ही बेचे।
9. देश में जो चीजें पैदा होती हैं या बनती हैं उनका आयात किसी भी कीमत पर देश में न करें।''**3**

इसी प्रकार सर विलियम पेटी ने सरकार द्वारा करारोपण किस प्रकार और किन वस्तुओं पर किया जाए, इसका विवेचन किया।

आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ (17123–1790) ने अर्थशास्त्र की परिभाषा करते हुए लिखा है, ''अर्थशास्त्र राष्ट्रों के धन के स्वरूप और कारणों की जांच करता है।'' इस संबंध में उसने जो ग्रंथ लिखा है उसका नाम है 'एन इन्क्वायरी इन टू दि नेचर एण्ड काजेस ऑफ दी वेल्थ ऑफ नेशंस'। स्मिथ ने अर्थशास्त्र को भौतिक वस्तुओं तक सीमित कर दिया। एडम स्मिथ सभ्यता के एक ऐसे बिंदु पर खड़ा था जहां व्यापारवाद जा रहा था और उद्योगवाद आ रहा था। साथ ही बाजार प्रणाली का विकास हो रहा था। स्मिथ ने बाजार की शक्ति को एक ऐसी अदृश्य शक्ति माना है जो बहुत हद तक निर्णायक है। बाजार के व्यवस्थित संचालन के लिए बाजार में वस्तु की मांग होना आवश्यक है। मांग की पूर्ति के लिए उत्पादक और उत्पादन आवश्यक है, मांग की तीव्रता और पूर्ति की उपलब्ध मात्रा लागत और बाजार में सतत चलने वाली स्पर्धा आदि तत्व मूल्य का निर्धारण करते हैं। मांग और पूर्ति के नियमों का विश्लेषण स्मिथ ने किया है और मूल्यों को उचित होने के लिए बाजार को राज्य के दखल से और एकाधिकारवादी मनोवृत्ति से बचाना जरूरी है। इस प्रकार स्मिथ 'मुक्त बाजार प्रणाली' का पुरस्कर्ता था। स्मिथ ने अपने विश्लेषण में धर्म, नैतिकता आदि को महत्व नहीं दिया केवल सिद्धांतों का तटस्थ वैज्ञानिक विवेचन किया।

सम्पत्ति के निर्माण में भूमि और श्रम की प्रधान भूमिका थी। इसलिए भूमि के लगान और श्रम की आपूर्ति जनसंख्या आदि महत्वपूर्ण हो गए। श्रमिकों की संख्या का वस्तु की उत्पादन लागत से सीधा संबंध था इसलिए जनसंख्या का अध्ययन शुरू हुआ। श्री थामस माल्थस नाम के पादरी ने इस संबंध में 'प्रिंसिपल्स ऑफ पापुलेशन एज इट अफेक्ट्स दि फ्यूचर इम्प्रूवमेंट ऑफ सोसायटी' नाम से ग्रंथ लिखा। डेविड रेकार्डो (1772–1823) ने अपने ग्रंथ 'प्रिंसिपल ऑफ पोलिटिकल इकानॉमी एण्ड टेक्सेशन' में मूल्य, लगान, मजदूरी, लाभ, विदेशी व्यापार और कर प्रणाली का विवेचन किया।

औद्योगीकरण की रफ्तार तेज होने से कल–कारखाने बढ़ रहे थे। विदेश व्यापार तेजी से बढ़ रहा था। उत्पादन बढ़ाने की कोशिशें हो रही थीं। लाभ कमाने के लिए एक और मशीनीकरण बढ़ रहा था तो दूसरी ओर शोषण भी बढ़ा। अमीर और अधिक अमीर हो रहे थे तथा गरीब और गरीब। फ्रांस की राज्य क्रांति ने दुनियाभर में स्वतंतत्रा, समानता और बंधुत्व का विचार फैला दिया। इसका असर अर्थशास्त्र पर भी हुआ। अर्थशास्त्र में समाज कल्याण का तत्व दाखिल हुआ। इसने समाज

के विकास को नयी दिशा दी। ऐसे अर्थशास्त्रियों में रॉबर्ट ओवेन (1771–1850), जान स्टुअर्ट मिल (1809–1873), फ्रेडरिक आ बेस्लियत (1801–1850), हेनरी जॉर्ज, कार्लमार्क्स, प्रिंस क्रॉपटकिन, जेबी से हाब्सन, अगस्ट कॉम्टे, अल्फ्रेड मार्शल, सिसमण्डी जैसे विचारक हैं। राबर्ट ओवेन ने ग्लासगो के पास लि–नार्क में कारखाने के साथ लगी हुई ऐसी बस्ती बसाई जो सहकारी जीवन का आदर्श थी। संत सायमन ने लोकतंत्र का विचार बहुत प्रचारित किया। जॉन स्टुअर्ट मिल का कहना था कि व्यक्ति के हित समाज हित से ऊपर नहीं हैं। फ्रेडरिक बेस्तियत ने लिखा कि 'समाज का हर व्यक्ति सरकार के खर्च पर जीना चाहता है, मौज करना चाहता है जबकि सरकार स्वयं सबके खर्चे से चलती है।''**4**

अमेरिकी विचार हेनरी जॉर्ज ने अर्थशास्त्र पर ही प्रहार किया और कहा कि मानवीय समस्याओं का हल अर्थशास्त्र के पास नहीं है। अराजकतावादियों में सबसे प्रखर चिंतक प्रिंस क्रोपटकिन था। मुक्त बाजार प्रणाली पर सबसे बड़ा प्रहार कार्लमार्क्स ने किया। उसने सन् 1848 में 'साम्यवाद का घोषणा पत्र' जारी किया। इससे मार्क्स दुनियाभर के मजदूरों का मसीहा बन गया। उसने लिखा था, 'साम्यवादी अपने विचार और लक्ष्य छिपाने से घृणा करते हैं। वे यह जाहिर करते हैं कि उनका लक्ष्य तभी प्राप्त होगा जब वे अपने सारे वर्तमान सामाजिक (आर्थिक) संबंधों को उलट देंगे। साम्यवादी क्रांति के समक्ष वर्तमान शासक वर्ग को गिर जाने देंगे। सर्वहारा को खोने के लिए कुछ नहीं है सिवाय उनकी बेड़ियों के और पाने के लिए सारी दुनिया है। इसलिए दुनियाभर के मजदूरों एक हो जाओ।''**5**

इससे पहले किसी ने भी मजदूरों के लिए इस प्रकार की बात नहीं कही थी। उन्होंने दास केपिटल में वैज्ञानिक और तार्किक पद्धति से अपने विचार प्रकट किए हैं। जिस प्रकार समाजवाद व्यक्तिवाद की प्रतिक्रिया है उसी प्रकार साम्यवाद पूंजीवाद की प्रतिक्रिया है। यूरोप के सारे जन जीवन पर मार्क्स के विचारों का जबर्दस्त प्रभाव हुआ। कार्ल मार्क्स को रूस की क्रांति के बाद और लेनिन की व्याख्या के कारण ज्यादा समझा गया। इसके आगे अल्फ्रेड मार्शल ने एडम स्मिथ के विचार में कुछ संशोधन करते हुए लिखा, ''अर्थशास्त्र धन का शास्त्र नहीं वरन मानव कल्याण के लिए धन के साधन का कैसे उपयोग करें इसका शास्त्र है।'' इस प्रकार धन साध्य नहीं साधन और समाज कल्याण साध्य है। अर्थशास्त्र की परिभाषा में संशोधन करने का श्रेय मार्शल को है। थोर्स्टीन वेब्लेन (1857–1929) ने उत्पादन के संस्थापक ढांचे और सुविधाभोगी वर्ग के संबंध में अपनी सुप्रसिद्ध कृति 'द लेबर क्लास' में लिखा है कि मुक्त बाजार प्रणाली में ऐसा वर्ग पनपता है जो परजीवी होता है। न श्रम करता है, न पूंजी लगाता है, न संगठन करता है और किसी प्रकार की उत्पादन प्रक्रिया में सम्मिलित होता है। लेकिन बिना कुछ पुरुषार्थ किए वह उपभोग करता है और अच्छा जीवन स्तर बनाए रखता है। यह ऐसा चालाक वर्ग होता है जो समाज में प्रतिष्ठा भी अर्जित कर लेता है और सब उसकी नकल या अनुकरण करना चाहते हैं। जान ए हॉब्सन (1858–1940) ने अपनी पुस्तक 'इम्पीरियलिज्म' में साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था का विश्लेषण किया। हॉब्सन ने ही कहा था कि साम्राज्यवाद पूंजीवाद का अत्यंत विकसित रूप है। सामयन डी सिसमण्डी (1773–1842) ने पहली बार मशीनों के हमेशा लाभदायक होने को चुनौती दी और कहा कि मशीनों का तत्काल असर यह होता है कि कुछ मजदूर बेरोजगार हो जाते हैं।

समाजवादी चिंतन प्रवाह के प्रहारों से मरते हुए पूंजीवाद को जीवनदान देने वाला महान विचारक जे.एम.कीन्स (1843–1946) है। मार्क्स ने कहा था कि पूंजीवाद अपने अंतर्विरोध से स्वतः समाप्त हो जाएगा लेकिन कींस ने अपनी पुस्तक में कहा कि इस व्यवस्था में अपनी जीव्यता है इस कारण पूंजीवाद समाप्त नहीं होगा। कींस ने पहला विश्वयुद्ध देखा और उसमें जो समझौता हुआ उसका विरोध इस आधार पर किया कि इसमें दूसरे विश्वयुद्ध के बीज थे। पश्चिम के आधुनिक अर्थशास्त्रियों में जे.के.गालब्रेथ और स्वीडन के गुन्नार मिर्डल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। गालब्रेथ ने तीन मुख्य समस्याओं का विश्लेषण किया :

1. सार्वजनिक क्षेत्र की प्रतिष्ठा कम होना,
2. समृद्ध बाजार वाली व्यवस्था ममें सार्वजनिक क्षेत्र की उपेक्षा,
3. आक्रामक विज्ञापन आवश्यकताएं बढ़ा देते हैं और नये उत्पादन बाजार में स्पर्धारहित होते हैं जिससे उत्पादक मनमाना मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। श्री गुन्नार मिर्डल ने 'एशियन ड्रामा से प्रसिद्धि हासिल की।

स्वराज्य के पूर्व भारत में दो महान अर्थशास्त्री हुए : दादाभाई नौरोजी और डॉ.जे.सी. कुमारप्पा। दादाभाई नौरोजी ने भारत में गरीबी का गहराई से विश्लेषण करके 'पावर्टी इन अनबिटिश रूल इन इंडिया' नामक ग्रंथ लिखा। उन्होंने लिखा, ''भारत में ब्रिटिशराज ऐसी गाय है जिसका मुंह भारत में है और स्तन इंग्लैंड में। यह गाय भारत में खाती है और इंग्लैंड में दूध देती है।'' डॉ.जे.सी. कुमारप्पा (1892–1960) ने 'सार्वजनिक वित व्यवस्था और हमारा दारिद्र्य' विषय पर शोध ग्रंथ लिखा। जिसे देखकर गांधीजी ने उन्हें डॉक्टर की उपाधि दी। वे गांधीजी के आर्थिक सलाहकार थे। श्री कुमारप्पा नदी वाली अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे। यद्यपि पं.नेहरू, जयप्रकाश नारायण और डॉ.राममनोहर लोहिया परंपरागत अर्थ में अर्थशास्त्री नहीं थे। लेकिन पं.नेहरू ने भारत मे मिश्रित अर्थव्यवस्था का सूत्रपात किया। चीन के अर्थशास्त्रियों का विवरण प्रकाशित नहीं होता लेकिन चीन में माओत्से तुंग के नेतृत्व में कार्ल मार्क्स के विचारों के आधार पर साम्यवादी क्रांति हुई।

औद्योगिक संस्कृति में जो आर्थिक सिद्धांत विकसित हुए वे अंतर्विरोधों से भरे हुए हैं और अस्थिर हैं। इसलिए हमें ऐसे सिद्धांतों की खोज करनी होगी जो समाज को स्थायी आधार प्रदान कर सकें। शांति और समृद्धि की और स्वतंत्रता और समता की ओर बढ़ा सकें। इन सभी विचारों से भिन्न सर्वोदय का विचार है। जैन तत्व चिंतक आचार्य समंतभद्र ने एक हजार साल पहले सर्वोदय शब्द का प्रयोग किया था। लेकिन गांधीजी ने सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक अर्थशास्त्री जान रस्किन की पुस्तक अन टू दिस लास्ट का भावानुवाद किया और इस पुस्तक को नाम दिया 'सर्वोदय।' यूरोप में कार्लाइल, रस्किन और रूस के टाल्सटॉय ने बाजारी अर्थव्यवस्था पर तीखे प्रहार किए। रस्किन की पुस्तक में जो मुख्य तत्व थे उसे गांधीजी ने इस भाषा में रखा

1. सबके भले में अपना भला अर्थात समाज के भले में व्यक्ति का भला है,
2. वकील, नाई, भंगी और प्रोफेसर के काम की कीमत एक–सी होना चाहिए क्योंकि आजीविका का हक समान है,
3. मजदूर और किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।''

आर्थिक सिद्धांतों की दृष्टि से गांधीजी द्वारा प्रवर्तित निम्नांकित रचनात्मक कार्यक्रमों का

उल्लेख आवश्यक है : खादी तथा ग्रामोद्योग आंदोलन, मजूर–महाजन संस्था का विचार, गो–सेवा, ट्रस्टीशिप, सत्याग्रह। गांधीजी ने ऐसे अर्थशास्त्र की नींव रखी जो प्रचलित औद्योगिक व्यावसायिक बाजार व्यवस्था से भिन्न स्वतंत्र अर्थव्यवस्था है। उनके विचारों पर विश्व के अनेक विचारकों ने चिंतन किया है जैसे इंग्लेंड में शूमाखर, अमेरिका में रिचर्ड ग्रेग, विल्फ्रेड बेलाक, होरेल एलेक्जेंडर, फ्रिट ज्यॉफ कॉप्रा, एल्विन टॉल्फर, एरिक फ्रॉम, हेबेल हेण्डरसन आदि। शूमाखर ने दो ग्रंथ लिखे – 'स्माल इन ब्युटिफुल' और 'स्मॉल इन पॉसिबल'। यूरोप में इसके आधार पर हरित आंदोलन चल रहा है। एल्विन टॉफ्लर ने विश्व प्रसिद्ध तीन ग्रंथ लिखे 'फ्यूचर शॉक', 'थर्डवेव' और 'पॉवर शिफ्ट'। टॉफ्लर ने आंकड़ों से यह सिद्ध किया है कि वर्तमान औद्योगिक संस्कृति में से किस प्रकार नयी संस्कृति का उदय हो रहा है। 'थर्डवेव' में गांधी एंड दि सेटेलाइट शीर्षक में अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की वकालत की है। 'पॉवर शिफ्ट' में ज्ञान समाज की चर्चा है। प्रसिद्ध भौतिकविद फ्रिटज्योफ काप्रा ने 'ताओ ऑफ फिजिक्स' और 'टर्निंग पाइंट' ग्रंथ लिखे। ताओ आफ फिजिक्स में भौतिक विज्ञान और वेदांत दर्शन की एकता सिद्ध की है। रिचर्ड ग्रेग ने 'विच वे लाइफ होप' और 'इकानामिक्स ऑफ खद्दर' नामक ग्रंथ की रचना की। इसमें उन्होंने गांधीजी की प्रासंगिकता सिद्ध की है।

संत विनोबा के आर्थिक विचारों में उपर्युक्त सभी का समावेश है। और आध्यात्मिक गहराई भी है। विनोबाजी के सम्पूर्ण साहित्य में ये सिद्धांत बिखरे पड़े हैं। विनोबा ने व्यक्ति के स्वार्थ प्रवाह, समाज के समाज प्रवाह और काल के काल प्रवाह का विश्लेषण और समन्वय किया है और सर्वोदय संस्कृति के आधारों को ज्यादा स्पष्ट किया है। आर्थिक सिद्धांतों के संबंध में विनोबा के कुछ विचार यहां उल्लेखनीय हैं :

अर्थशास्त्र ऐसा शास्त्र नहीं है, जो मनुष्य का नियमन करे। मनुष्य ही अर्थशास्त्र का नियमन करता है।''**6** 'गणित तो सब देशों के लिए समान हो सकता है लेकिन अर्थशास्त्र समान नहीं होता। यह तो हर देश और हर जमाने में स्वतंत होता है। हिंदुस्तान का अर्थशास्त्र अलग रहेगा और रूस तथा अमेरिका का अलग। इतना ही नहीं, मैं तो यह भी कहना चाहूंगा कि हिंदुस्तान में आज का अर्थशास्त्र अलग होगा, कल का अलग होगा और संभव है परसों का उससे भी अलग हो अर्थशास्त्र देश और काल में भेदों से विविध हो सकते हैं और होते हैं।''**7**

''जो अर्थशास्त्र मानवता को विरुद्ध बोलेगा वह मानवी शास्त्र नहीं, राक्षसी अर्थशास्त्र है।''**8**

''आधुनिक अर्थशास्त्र में ह्यूमन फेक्टर कम हो गया है और यांत्रिक शक्ति बढ़ाने की ओर ज्यादा ध्यान दिया गया।''**9**

''जो साधारण अर्थशास्त्री विचार माने गये हैं, पर जो अक्सर लोभ के विचार होते हैं उन्हें हम महत्व नहीं देते। एक परिवार में जो ज्यादा लागू करते हैं उसे हमें गांव में भी लागू करना है। इसलिए लोगों को उत्तेजन देने के आज तक के मान्य तरीकों को हम नहीं मानते। हमारे उत्साह की बुनियाद आध्यात्मिक ही होगी इसी पर हमारा यह काम खड़ा हुआ है। इसीलिए हमें देखना होगा कि लोगों की नैतिक प्रवृत्ति दिन–दिन बढ़े और सतत त्याग में ही उन्हें आनंद महसूस हो। फिर उनके हाथ में ज्यादा पैसे आते हैं या नहीं यह सवाल महत्व का नहीं है। हम लक्ष्मी का अनुग्रह जरूर चाहेंगे लेकिन यह विष्णु की

कृपा से ही। लक्ष्मी और पैसे मे हम उतना ही फरक मानते हैं जितना सुर और असुर में।''**10**
''जिसको पैसे पर आधारित अर्थशास्त्र (मनी इकानॉमी) यानी पैसे पर आधारित समाज रचना कहते हैं उसका मैं खण्डन करना चाहता हूं। और उसके बदले में श्रम आधारित समाज रचना कायम करना चाहता हूं।''**11**
''कम से कम मुझे तो आज कांचन मोह मुक्ति और शरीर श्रम में ही भारत का उद्धार दिखाई देता है।''**12**
''जब तक देश में आर्थिक साम्य स्थापित नहीं होगा तब तक शांति नहीं होगी।''**13**

''व्यक्तिगत मालकियत पवित्र वस्तु है तो व्यक्तिगत स्वामित्व विसर्जन इससे भी पवित्र है।''**14**

''मालकियत कायम रखते हुए सत्ता का विकेंद्रीकरण होगा तो वह विकेंद्रित शोषण की योजना होगी। सहकारी मण्डलियों की यह शर्त होनी चाहिए कि पहले मालिकी विसर्जन हो और बाद में सहकार हो।'''आज व्यक्तिगत मालकियत के ऊपर एक तरफ से आत्मज्ञान का प्रहार हो रहा है और दूसरी ओर से विज्ञान का भी प्रहार हो रहा है।''**16**

निजी सम्पत्ति की जो भावना लोगों के मन में उत्पन्न हो गई है वह आज की समाज रचना और कानूनों के कारण है।''**17**

''अहिंसा और अक्ल को आत्मज्ञान कहते हैं। इस आत्मज्ञान के साथ विज्ञान का योग होना चाहिए।''

''यह बात समझने की है कि विज्ञान और यंत्र विद्या अलग–अलग हैं। हमारे यहां एक गलतफहमी है कि विज्ञान याने बड़े–बड़े यंत्र। लेकिन यह गलतफहमी हमें दूर करनी चाहिए। विज्ञान याने सृष्टि का ज्ञान। इसलिए हमें यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि जैसे विज्ञान बड़े यंत्रों में प्रकट होता है वैसे ही छोटे यंत्रों में भी हो सकता है। अपने देश में इस समय इस परिस्थिति में कौन–सा यंत्र इस्तेमाल होना चाहिए, इसका निर्णय विज्ञान नहीं कर सकता। निर्णय देने का काम आत्मज्ञान का है। हिंदुस्तान की आज की हालत में जो यंत्र उचित होगा, वह दूसरी हालत में अनुचित हो सकता है। जो यंत्र अमेरिका में उचित होगा, वह यहां के लिए अनुचित हो सकता है। उसके उचित–अनुचित के संबंध में हमें देश, काल और परिस्थिति देखकर निर्णय करना होगा। कौन सा यंत्र काम में लाया जाए, इसका निर्णय आत्मज्ञान करेगा और उसके कारण बनने का काम विज्ञान करेगा।''**18**

सर्वोदय विचार में दो बुनियादी बातें मानी गयी हैं, ''रोजमर्रा की सारी चीजें खाना, कपड़ा आदि गांव में पैदा हो। छोटे–छोटे उद्योगों के जरिए लोग स्वावलंबी बनें। जो काम घर में हो सकते हैं – जैसे रसोई, कलाई, आदि वे घर में हों और गांव में हो सकते हैं जैसे तेल, जूते आदि गांवों में हों। और दूसरा लोहा, कोयला, अभ्रक के जैसे बड़े–बड़े धंधे जिनका संबंध न सिर्फ देश के बल्कि सारी दुनिया के साथ है किसी व्यक्तिगत मालकियत के न रहें। उन पर समाज की मालकियत हो। इसके बगैर सर्वोदय नहीं हो सकता।''**19**

''पूंजीवाद क्षमता का हामी है। वह कहता है कुछ लोगों की योग्यता ज्यादा है इसलिए उन्हें ज्यादा मिलना चाहिए। वह योग्यता के अनुसार पारिश्रमिक देकर समाज में क्षमता लाना चाहता है। इससे कुछ लोगों का जीवन ऊंचे स्तर का चला गया है, लेकिन बहुत सारे लोगों का जीवन तो बिलकुल खाई में गिर गया है। पूंजीवाद के पास इसका कोई इलाज

नहीं है। उसका तो साफ कहना है कि जो नालायक है, उनके लिए इसके सिवा कोई मार्ग नहीं कि वे नालायक बने रहें, और जो लायक हैं, वे दुनिया के सुख साधनों का लाभ उठाएं यह अनिवार्य है। इसीलिए आज दुनिया दुःखी है। पूंजीवाद के समर्थक कम हैं फिर भी वह चल रहा है। लेकिन आज नही ंतो कल वह टूटने वाला ही है।''**20**

यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि सर्वोदय संस्कृति का दिखाने जैसा कोई नमूना आज तक बना नहीं है। गत 50–60 वर्षों में इस पर ज्यादा चिंतन हुआ है। गांधीजी अपने जीवन काल में तो इन विचारों का प्रयोग करते रहे। कुछ प्रयोग सिद्ध हुए और कुछ नहीं भी हुए। दुनियाभर में अनेक लोग इन विचारों का जहां–तहां अपने–अपने स्तर पर प्रयोग कर रहे हैं। धीरे–धीरे ये छोटी–छोटी धाराएं आपस में मिल जाएंगी और एक महानदी का रूप ले लेगी। आज विश्वभर में आर्थिक स्वतंत्रता की लोक आकांक्षा उत्पन्न हुई है और सर्वोदय विचार का, विनोबा विचार का इस संदर्भ में बहुत महत्व है। सर्वोदय विचार ने दुनियाभर के धर्म विचारों जैसे वैदिक, इस्लाम, इसाइयत, यहूदी, पारसी, बौद्ध, जैन आदि के मूलतत्वों को अपने विचार में समाहित कर लिया है। इसलिए इसे सर्वधर्म स्वीकार कर लेंगे। विश्व में विकसित आधुनिक विज्ञान की विशेषताओं को भी सर्वोदय स्वीकार करता है। इसलिए वैज्ञानिक चिंतन वालों को भी यह स्वीकार होगा तथा विश्व को राजनैतिक चिंतन धाराओं के लोकोपयोगी तत्वों को भी सर्वोदय विचार स्वीकार करता है तथा आर्थिक चिंतनधाराओं की उपलब्धियों को भी यह विचार मान्य करता है। इसलिए यह एक सर्वसमावेशक दर्शन है। इसीलिए अंततः मानवता के लिए इसका अत्यधिक महत्व है।

1. हिस्ट्री ऑफ इकानॉमिक थॉट सं. विलियम केप, प्रकाशक बार्न्स
2. हिस्ट्री ऑफ इकानॉमिक थॉट सं. विलियम केप, प्रकाशक बार्न्स पृष्ठ 37
3. हिस्ट्री ऑफ इकानॉमिक थॉट सं. विलियम केप, प्रकाशक बार्न्स पृष्ठ 47, 48
4. वर्ल्डली फिलासर्फ, राबर्ट व्हील ब्रोनर, सायमन एण्ड थूस्टर, न्यूयार्क 151
5. वर्ल्डली फिलासर्फ, राबर्ट व्हील ब्रोनर, सायमन एण्ड थूस्टर, न्यूयार्क 112
6. प्रार्थना प्रवचन सर्व सेवा संघ प्रकाशन पृष्ठ 57
7. विनोबा प्रवचन 1957 सर्व सेवा संघ प्रकाशन
8. प्रार्थना प्रवचन सर्व सेवा संघ प्रकाशन 1957
9. अंबर चर्खा पत्रिका
10. भूदान गंगा खण्ड 5
11. हरिजन सेवक, पत्रिका, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 1951
12. गांधी और साम्यवाद, किशोरलाल मश्रूवाला, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
13. सर्वोदय मासिक सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 1951
14. प्रार्थना प्रवचन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन 1957
15. भूदान यज्ञ
16. भूदान यज्ञ साप्ताहिक, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1956
17. भूदान यज्ञ साप्ताहिक सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1956
18. भूदान यज्ञ साप्ताहिक, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1956
19. विनोबा प्रवचन सर्व सेवा संघ प्रकाशन 1958
20. भूदान गंगा 2 संपादक निर्मला देशपांडे सर्व सेवा संघ प्रकाशन पृष्ठ 34
21. भूदान गंगा 3 संपादक निर्मला देशपांडे सर्व सेवा संघ प्रकाशन पृष्ठ 63